①

Lecture No. 07

Name of the college A.P.S.M. College, Barauni, Begusarai
L.N.M.U. Darbhanga

Name - Dr. Bharti Kumari (G.T.)

Deptt - A.I.H. & C

Lession / Plan for class - B.A Part III (H) paper IV

Date - 22-06-21

Name of the topic - ~~ख~~ खजुराहो - यूनिट II
Continue

खजुराहो - खजुराहो के मंदिरों की निजी विशेषता है। स्थापत्यकला की दृष्टि से इस शैली में निम्नलिखित गुण वर्तमान है।

(1) परकोटा का अभाव - खजुराहो शैली के मंदिर घेरों में बने नहीं थे।

(2) ऊँचे प्रस्तर का चबूतरा - प्रत्येक मंदिर का निर्माण ठोस प्रस्तर के सीढ़ीदार चबूतरे पर हुआ था। पुजा निर्मित उस सीढ़ी मंदिर तक सरलतापूर्वक पहुँच जाते है। इसके देखने से प्रतीत होता है कि मंदिर का कोई भाग पृथक अस्तित्व नहीं रखता, बल्कि सभी एक साथ बंधे है। एक दूसरे से ओत-प्रोत होने के कारण सुसंहत वास्तु का रूप ले लेते है -

(3) मंदिर का कोई भाग बहुत ऊँचा नहीं है। सभी ओर से नीचे ही ऊँचाई है।

(4) मंदिर तीन भागों में बँटा है।

(अ) गर्भगृह

(ब) मंडप - सभामंडप (वर्गाकार है, स्तम्भयुक्त है)

(स) अर्द्धमंडप - प्रवेश बरामदा, जो चौकोना है

(5) गर्भगृह के समीप गलियारा को अंतराल कहते है जो इसे मंडप से जोड़ता है।

(6) विकसित मंदिर में गर्भगृह के चारों तरफ प्रदक्षिणा पथ का स्थान सुरक्षित है, तथा ~~बाजू के~~ बाजू के भाग को महामंडप कहते है यानि प्रदक्षिणा पथ से संयुक्त महामंडप है इसमें खिड़कियाँ खुलती है।

(7) खजुराहो के मंदिरों में अर्द्धमंडप से गर्भगृह ऊँचा

P.T.O.

Scanned with CamScanner

होता चला गया है। यानी ऊँचा उठने का क्रम निश्चित कर दिया गया है।

(8) खजुराहो समूह के मंदिरों का बाह्य अलंकरण चारों तरफ बाहरी दीवार के ताख या खोल में, जहाँ मोड़ या उभार दीख पड़ता है। मनुष्य के अर्द्ध आकार में चित्रवल्लरी उत्कीर्ण है। उस चित्रवल्लरी में मानव की शोभा-यात्रा दीख पड़ती है जिसका अंत अज्ञात है। मंदिर के अंतर्भागों का बाह्य दीवार में गवाक्ष है, और उनमें मूर्तियों की समानान्तर पंक्तियाँ उत्कीर्ण है। उनके देखने से कला की पराकाष्ठा मालूम पड़ती है। खजुराहो की कैंदरिया महादेव की दीवार पर साढ़े छह सौ आकृतियाँ अथवा मिथुन युग्म बनाए गए है।

(9) प्रत्येक भाग के ऊपर मीनार है, अर्द्ध मंडप पर छोटी जो क्रमशः ऊँची होती चली जाती है।

(10) उरुशृंग की बनावट - गर्भगृह की मीनार पर चारो तरफ शिखरनुमा आकार उरुशृंग कहते है। मंदिर शिखर के निचले भाग से शिखरनुमा आकार (अंगशिखर) आरंभ होकर ऊपर उठता है और उसे उरुशृंग के स्थान तक समाप्त हो जाता है। यह बनावट चारो तरफ मुख्य मीनार के दीवार से जुड़ी रहती है। अंगशिखर की बहुलता ही खजुराहो शैली की विशेषता है। सभी सहसंबद्ध है।

(11) मंदिर की पूरब दिशा में प्रवेश द्वार - इस द्वार तक पहुँचने के लिए सीढ़ीयाँ बनी है, जो धरातल से ऊँचाई तक स्थित है।

(12) गुलाबी या मटैयाले रंग के प्रस्तर - खजुराहो के समीप चालीस किलोमीटर पर स्थित पन्ना की खदान से गुलाबी या हल्के पीले रंग के प्रस्तर सुलभ है। जिनका प्रयोग मंदिर - निर्माण में किया गया है।

(13) खजुराहो समूह की अंतस्थ दीवारों की खुदाई - खजुराहो शैली के मंदिरों की आंतरिक दीवार प्रचुर मात्रा में खुदी है। क्रि०

(14) शिखर पर आमलक, उस पर स्तूपिका और कलश सभी मंदिरों पर बनाये गए हैं।

(15) खजुराहो मंदिरों में मंडप 25 वर्ग फुट में विस्तृत है परन्तु इस छोटे भाग में अपनी छत को सँभालने के लिए स्तम्भ खड़े किए गए हैं। चार स्तंभों पर प्रस्तर की शहतीर द्वारा सम्पूर्ण बोझ को उठाया गया है। स्तंभ के सिरे पर विलग वामन-आकृतियाँ हैं ऐसा लगता है कि वे छत को सहारा दे रही हैं। खजुराहो समूह यानी आर्य शिखर के दैत्यों के अलंकरण में विकृत रूप वाले वामन तथा शार्दूल की विशेष स्थिति पायी जाती है। उनके निचले भाग से स्त्रियों की आकृतियाँ उभरी हुई एवं नृत्य की जो आकर्षक तथा अतीव सुंदर हैं एवं नृत्य की मुद्रा में प्रकट होती हैं। मंदिरों की भीतरी छतें भी सुशोभित हैं ... बारीक — "चमत्कारपूर्ण ढंग से सुशोभित हैं" बाउन — कलाकार ने ही भीतरी का मत है कि — इनकी कलाकार ने ही भीतरी प्रस्तरों की पृथक खुदाई की गई। तत्पश्चात् निर्माण करते समय उन्हें समुचित स्थान पर ठीक-ठाक बैठा दिया गया। इसी प्रकार मंदिर के प्रत्येक टुकड़े को अलग ही पुरस्कृत कर सुसज्जित किया गया और समयानुकूल उन्हें उप-उचित जगह पर जोड़ दिया गया। इस प्रकार मंदिर की भीतरी भाग का अलंकरण सम्पन्न किया गया था। सभी बातों पर विचार करने से प्रकट होता है कि ऐसी जटिल परिकल्पना में धीरता के साथ तथा चतुराई से प्रस्तर की खुदाई साधारण बात नथी। मंदिर की अंधकारमय स्थिति से समस्या और भी उलझती रही, तो भी भारतीय कलाकारों ने कमाल दिखाया।

खजुराहो के निकट ग्रामीण क्षेत्र में तीन मंदिर हैं, जिनमें कुछ भग्न हैं। P.T.O.

यहाँ तीनों मतों - वैष्णव, शैव तथा जैन के मंदिर विद्यमान हैं। शैवमत का प्रधान मंदिर कैलाश तथा विश्वनाथ के नाम से विख्यात है। वैष्णव - मंदिरों में चतुर्भुज ही वर्तमान है। पार्श्वनाथ का मंदिर जैन मत के प्रसार की याद दिलाता है। इनमें मंदिरों में मध्य भारतीय मंदिरों के गुण वर्तमान हैं। योजना तथा बनावट में समानता होते हुए खजुराहो शैली के नाम से उल्लिखित किये गये हैं। ऊँचे चबूतरे पर निर्मित मंदिर में मुख्य शिखर से लगाकर अंगशिखर की पुनरावृत्ति विशेष उल्लेखनीय है। इसकी बनावट के कारण ही मध्य भारत में मंदिर पूर्ण रूप से विकसित समझे जाते हैं।

खजुराहो के इतिहास में वामन तथा आदिनाथ का मंदिर प्राथमिक अवस्था के द्योतक हैं। बनावट समान है। गर्भगृह योजना में सप्तरथ प्रकार का है। इनकी मीनार की स्पष्ट परिरेखा विच्छिन्न नहीं है, यद्यपि अंगशिखर (उरूश्रृंग) की परिकल्पना यथावत् ही गर्भगृह की दीवारें सुंदर रीति से गढ़ी गई तथा खुदी है। आदिनाथ मंदिर पार्श्वनाथ के पार्श्व में निर्मित है। इसके मंडप तथा अनुलग्न प्रस्तर के स्थान पर ईंट दीख पड़ती है। वामन मंदिर से भी इसका शिखर ऊँचा है। यही दोनों मंदिरों के आधार पर खजुराहो के मंदिरों में विकास का क्रम आरंभ हुआ, जिसने पूर्णता को प्राप्त कर लिया।

भारती कुमारी
A.I.H.C. & C.
Date — 22-06-21